National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 28-12-2023, Accepted: 14-01-2024, Published: 01-02-2024
Volume 9, Issue 1, 2024, Page No. 19-20

धर्म शास्त्रों में मनुष्य जाति को समान अधिकार दिए गए हैं।

ब्रजेश कुमार
शोधार्थी, स्वतंत्र लेखक एवं शाखा प्रबंधक, नई गूँज पत्रिका, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
वर्तमान जन्म–आधारित जाति व्यवस्था और उससे जुड़ा सामाजिक भेदभाव भारत पर एक कलंक है और हमारी प्राचीन संस्कृति की संकल्पना के पूरी तरह से विरुद्ध है।
प्राचीन धर्मशास्त्रों में, मनुष्य जाति के समान अधिकारों का उल्लेख किया गया है, इसके सर्वोत्कृष्ट उदाहरण वेद और उपनिषद हैं । समयानुसार, इस विषय में विचारशील दार्शनिकों ने भी अपने ग्रंथों में समर्थन दिया है।
वेदों में जातिवाद का विरोध किया गया हैं,। उपनिषदों में आत्मा के एकत्व का महत्वपूर्ण रूप से संकेत है, जिस के अन्तर्गत सभी मनुष्यों को एक समान दृष्टिकोण से देखा जाता है। इसके अतिरिक्त, महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों में भी कर्म, और योग्यता के आधार पर व्यक्ति के महत्व पर बल दिया गया गया है, जो जातिवाद के विरोध के भाव को प्रस्तुत करता था।
प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्रों में समानता की भावना से संबंधित धार्मिक साहित्य विद्यामान हैं। उपनिषदों का धार्मिक विचारमय साहित्य मानवता के एकत्व पर बल देता है। महाभारत और रामायण में भी इस सबंध में स्पष्ट उदाहरण हैं, जहां कर्म, योग्यता, और आचरण के आधार पर व्यक्ति को महत्वपूर्ण बनाया गया है, जो जातिवाद की अस्तित्वशैली दृष्टिकोण का विरोध प्रस्तुत करता था।
भगवत गीता में, भगवान कृष्ण ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्होंने गुण (गुण) और कर्म के आधार पर चार वर्ण बनाए; जन्म का उल्लेख नहीं है. प्राचीन भारत में ऋषियों या संतों को सर्वोच्च दर्जा दिया गया था, और हमारे दो महान महाकाव्य, रामायण और महाभारत, उन ऋषियों द्वारा लिखे गए थे जो जन्म से ब्राह्मण नहीं थे।

मूल शब्दः मनुष्य जाति, प्राचीन संस्कृति, प्राचीन धर्मशास्त्र

संसार परमात्मा की बनाई हुई व्यवस्था है जिसमें सभी प्राणी मात्र के साथ कोई भेदभाव नहीं किया गया है। परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार समस्त जीवो को अन्न, जल, वायु, प्रकाश आदि पदार्थों का भोग करने का समान अधिकार दिया है | फिर चाहे वह जीव हो या मनुष्य ?
हम आज देखते हैं कि जो जीव– जंतु है ये परमात्मा की व्यवस्था का उल्लंघन नहीं करते हैं जबकि उसी व्यवस्था के अनुसार अपना जीवन यापन करते हैं। चाहे वह दुनिया का कोई सा भी पशु–पक्षी क्यों ना हो।
जैसे:– गाय के सामने मांस डालने पर वह उसे कभी भी नहीं खाती है, चाहे वह कितने ही दिन से भूखी हो |
परंतु यह मनुष्य जो परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है वह पग–पग पर परमात्मा की व्यवस्थाओं का उल्लंघन करता ही रहता है द्य वह भूल जाता है कि उसके पास परमात्मा पदत्त बुद्धि होने पर भी व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करता है द्य जिसके कारण आज मानव– मानव में भेद करने लग गया है द्य चाहे मनुष्य का खानपान हो, चाहे वर्णाश्रम व्यवस्था, चाहे मनुष्य जाति में स्त्री–पुरुष की बात हो द्य समाज में अपने अनुसार नियम बना लेते है जिससे समाज में अराजकता तथा भेदभाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और विरोधी लोगों के लिए किसी संस्कृति का मजाक तथा धर्म पर आक्षेप करने को मिल जाता है।
जिससे हर मनुष्य मात्र लज्जित होता है और वह नास्तिकता की तरफ बढ़ने लगता है द्य अगर शास्त्रों की बात करें तो शास्त्र मनुष्य मात्र तथा मनुष्य जाति को भी समान अधिकार देते हैं।
जो सनातन संस्कृति के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद हैं उनमें भी सभी वर्णों को वेदाध्ययन करने का अधिकार तथा सभी मनुष्य को भाई– भाई कहा है :–
ऋग्वेद का मंत्र है–

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुरू सौभगाय।
–ऋ. 5|60|5

सौभग–सौभाग्य– कल्याण साधने के लिए मानव परस्पर अज्येष्ठ और अकनिष्ठ है अर्थात कोई बड़ा और छोटा नहीं – की भावना रखते हुए भाई –भाई बनकर दिन– प्रतिदिन बढा करते हैं, उन्नत होते हैं | किसी के प्रति ईर्ष्या– द्वेष और निरादर का व्यवहार न करना चाहिए |

समस्त वर्णो का वेदाध्ययन में अधिकार :–
यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य: |
ब्राह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चाय्यार्य च स्वाय चारणाय |
– यजु. 23|2

जैसे मैं ईश्वर इस कल्याणी वेदवाणी का मनुष्य मात्र के लिए उपदेश देता हूं वैसे आप लोग भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, जांगलिक जन और भृत्य के लिए भी इसका उपदेश दो द्य

श्रावयेच्चतुरो वर्णान् कृत्वा ब्राह्मणमग्रत:|
वेदस्याध्ययनं हीदं तच्च कार्यं महत्स्मृतम् ||
–महाभारत शांति. मोक्ष.अ. 327|48

चारों वर्णों को वेद का अध्ययन सुनावे– यह कार्य महत्वपूर्ण है | ब्राह्मण को आगे बिठावे – यह बैठाने में शिष्टाचार है |

ज्यायांसमपि शीलेन विहीनं नैव पूजयेत् |
अपि शूद्रं च धर्मज्ञम् सद्वृत्तमभिपूजयेत् ||
– महाभारत अनुशा. आ.48|48

शील से विहीन ब्राह्मण का भी सत्कार ना करें, अपितु धर्म से युक्त, सद् व्यवहार युक्त शुद्र की भी पूजा करें |
ऐसा नहीं है कि प्राचीन समय में भी अनेक लोग शुद्र वर्ण में होते हुए भी वेद पढ़कर ऋषि पदवी को प्राप्त हुए हैं, ऐतरेय महिदास ने ऋग्वेद पर ऐतरेय ब्राह्मण लिखा, ताण्ड्य ने सामवेद पर

ताण्ड्य महाब्राह्मण रचा, कवल ऐलुष तो ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का दृष्टा ऋषि हुआ |

पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियों का भी धर्म और वेदाध्ययन में समानाधिकारः–

संध्याकालमना: श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी |
नदीं चेमां शुभजलां संध्याथै वरवर्णिनी ||
– बाल्मी. रा. सुंदर.14|49

हनुमान जंगल में सीता की खोज करते हुए विचारते हैं कि संध्याशील सीता संध्या करने के हेतु इस शुभ जल वाली नदी पर आएगी मैं यहां ठहरुँ |
सीता संध्या करती थी, इससे स्त्रियों को भी धर्म कार्य करने का अधिकार था यह स्पष्ट है |

अग्निम् जुहोति स्म तदा मंत्रवत् कृतमङगला ||
– वाल्मी. रा. अयो.

कौशल्या मंत्र पढ़कर हवन करती थी |
इससे स्त्रियों को मंत्र पढ़ने – वेद पढ़ने तथा अग्निहोत्र करने का भी अधिकार था |

समानं ब्रह्मचर्यम् |
– श्रोतसूत्र. पटल [15]

बालक और कन्याओं का ब्रह्मचर्य समान है |

अगर प्राचीन काल की बात करें तो हमारे यहां पर अनेक स्त्रियां वेद की ऋषिकाये हुई है |

गार्गी वाचक्नवी वडला प्रातिभेयी सुलभा मैत्रेयी |
– आश्वलायन गुह्मसूत्र 3|4

वचक्नु की पुत्री गार्गी, प्रतिभा की पुत्री बड़वा, सुलभा, मैत्रेयी ऋषिकाये हुई |

वैदिक धर्म का प्रचार करने वाली अरुंधति महती विदुषी कहती है कि –
"मैंने तपोवृद्धि आप महानुभावों के स्मरण से प्राप्त की है एवं आप जनों के प्रसाद से शाश्वत धर्मों का उपदेश करूंगी |

वेद में स्त्री को ब्रह्मा होने का कथन है –
स्त्री ब्रह्मा बभूविथ |
– ऋ. 8|33|19

स्त्रियों को सन्यास का अधिकार–
शंकरा नामक परिव्राजिका आसीत् |
– महाभाष्यव्याकरण 3|2|14

शंकरा नाम भी सन्यासिनी हुई | तथा महाभारत में भी आता है कि सुलभा सन्यासिनी ने जनक विदेह को मोक्ष मार्ग का उपदेश दिया –

अथ धर्मयुगे तस्मिन् योगधर्ममनुष्ठिता |
महीमनुचचारैका सुलभा नामा भिक्षुकी ||
– महाभारत शांति. मोक्ष. अ. 320|7

उस धर्म युग में योग विद्या में निष्णाता एक सुलभा सन्यासिनी पृथ्वी पर विचरण कर रही थी |

खानपान और धर्म के आधार पर समानता
बाल्मीकि रामायण में प्रमाण मिलता है कि सभी वर्णों को यज्ञ में प्रविष्ट होने का समान अधिकार है |

ब्राह्मणान् क्षत्रियान् वैश्यान् शूद्रांश्चौव सर्वश: |
समानयस्व सत्कृत्य सर्वदेशेषु मानवान् ||
–बाल्मी. राम. बाल. 13|20,21

दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में वशिष्ट ने सुमंत को आदेश दिया कि इस यज्ञ में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को भी सत्कार से लाओ |

समानी प्रपा सह वो अन्नभाग: |
– अथर्ववेद 3|30|6

तुम्हारा जल पीने का स्थान – प्याऊ समान हो और अन्न भोजन का भाग– परसने का स्थान अर्थात भोजनालय एक हो |
अतः हमने पाया कि धार्मिक ग्रंथों में मानव को मानव से अलग करने का कोई स्थान नहीं है, बल्कि यह तो स्वार्थी और सोची समझी साजिश करने वाले लोगों की बनाई हुई व्यवस्था है द्य जिससे वे लोग आसानी से अपने स्वार्थ की पूर्ति कर सकें द्य और समाज को तोड़ सके द्य यही कारण है कि वर्तमान में लोग अनर्गल बातों को लेकर आपस में समाज के अंदर भाईचारे को खत्म करने का कार्य करते हैं द्य अतः हम सबको चाहिए कि इनके बहकावे में ना कर परमात्मा की बनाई हुई व्यवस्था के अनुसार जीवन यापन करें और सुखी रहे |

संदर्भ ग्रन्थ
1. ऋग्वेद
2. अथर्ववेद
3. यजुर्वेद
4. बाल्मीकि रामायण
5. महाभारत
6. महाभाष्य व्याकरण
7. आश्वलायन गुह्मसूत्र